ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

भारत में आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के अवसरः एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 अरूण प्रसाद अमन

सहायक प्राध्यापक (अर्थषास्त्र विभाग), आर. एस. एस. साइंस कॉलेज, सीतामढ़ी, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांशः भारत युवाओं का देश है, भारत मे 15–64 वर्ष की 67.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसलिए भारत को जनांकिकीय लाभांश की स्थिति प्राप्त है। भारत के जी.डी.पी. ने कृषि क्षेत्र का योगदान सबसे कम 18 प्रतिशत है। किंतु भारत की 49 प्रतिशत जनसंख्या आज भी कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। जबकि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में निर्भरता क्रमशः 14 एवं 27 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है, कि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र भारतीय श्रमबल को आज भी खपाने में असमर्थ है। भारत में रोजगार में वृद्धि एवं जी.डी.पी. में वृद्धि के बीच विपरीत संबंध देखने को मिला है। अर्थात भारत में जॉबलेश ग्रोथ की स्थिति निर्मित हुयी हैं।

कुंजीः आर्थिक समृद्धि, जॉबलेश ग्रोथ, समावेशी विकास, ट्रिकल डाउन थ्योरी, जनांकिकीय लाभांश, मानव विकास, फिलप्स वक्र।

प्रस्तावनाः आर्थिक विकास से आशय किसी देश में एक वर्ष में के उत्पादन में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि से है। मीर एवं राउच के अनुसार मात्रांत्मक आर्थिक प्रगति ही आर्थिक समृद्धि है। आर्थिक समृद्धि धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनो हो सकती है। भारत ने पिछले कई वर्षों से आर्थिक प्रगति की है। 1980–81 से 1990–91 के दौरान देश की आर्थिक समृद्धि दर 5.2 प्रतिशत थी, जो सुधार काल के उपरांत 1990–91 से 2000–2001 के दौरान 5.6 प्रतिशत हो गयी। तत्पश्चात् 2000–01 से 2003–04 के मध्य 6 प्रतिशत रही। जो तीव्रगति से बढ़कर 2004–05 से 2009–10 के बीच 8.7 प्रतिशत हो गयी। आर्थिक समीक्षा 2020–21 अनुसार भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ वर्ष 2017–18 में 7 प्रतिशत 2019–20 में 4. 2 प्रतिशत तथा 2020–21 में 7.3 प्रतिशत की गिरावट के बाद वर्ष 2021–22 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 9.3 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के वर्ल्ड एकोनॉमिक आउटलुक के अनुसार वर्ष 2022–23 मे भारत की रियल जी.डी.पी. विकास दर 9 प्रतिशत और 2023–24 में 7.1 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गयी है। बेरोजगारी से आशय उस श्रम शक्ति से है जो काम करने के इच्छुक है, काम करना चाहते है, काम ढूडने का प्रयास करते है। फिर भी उन्हे काम नहीं मिल पाता है। वास्तव में भारत मे अदृश्य बेरोजगारी की स्थिति पाई जाती है। जिसमें श्रम शक्ति काम में लगी हुयी दिखाई देती है, लेकिन उत्पादन में उसका कोई योगदान नहीं होता है। भारत में जिस गति से जी.डी.पी. में वृद्धि हुयी है। उसका अनुशरण रोजगार में वृद्धि ने नहीं किया है। जबकि ट्रिकल डाउन थ्योरी के अनुसार यदि जी. डी.पी. बढ़ती है, तो उसके प्रभाव के कारण गरीबी एवं बेरोजगारी में कमी आती है।

शोध के उद्देश्य–

1. भारत में आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के बीच संबंध ज्ञात करना।
2. रोजगार में कृषि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र के योगदान का अध्ययन करना।

यह शोध पत्र मूलतः द्वितीयक समंको पर आधारित है। इसमें अध्ययन के लिए वर्ष 1950–51 से 2021–22

के मध्य प्राप्त समंको का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक समंको का संकलन आर्थिक सर्वेक्षण, आई.एम.एफ. , वर्ल्ड बैंक एवं अन्य शोध–पत्र एवं पत्रिकाओं से किया गया है। समंको के विशलेषण में प्रतिशत विधि एवं आवश्यकतानुसार अन्य विधियों का प्रयोग किया गया है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत श्रमबल की स्थिति भारत के प्राथमिक क्षेत्र में 48.9 प्रतिशत श्रमबल

कृषि क्षेत्र में कार्यरत है। जबकि द्वितीयक क्षेत्र में 24.3 प्रतिशत तथा तृतीयक/सेवा क्षेत्र में 26.8 प्रतिशत श्रमबल कार्यरत है। भारतीय जी.डी.पी. में कृषि क्षेत्र का योगदान 18 प्रतिशत है। जो कि सबसे कम है। जबकि सबसे ज्यादा रोजगार 48.9 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ही प्रदान करता है। सेवा क्षेत्र का योगदान जी.डी. पी. में 55 प्रतिशत है। जबकि वह मात्र 26.8 प्रतिशत ही लोगो को रोजगार प्रदान करता है। अतः स्पष्ट है, कि कृषि क्षेत्र ही भारत के आर्थिक विकास का आधार है।

भारत में कार्यरत श्रम शक्ति की स्थिति, 2011–12 (%)

क्षेत्र	कार्यरत श्रम शक्ति
प्राथमिक क्षेत्र/कृषि क्षेत्र	48.9
द्वितीयक/औद्योगिक क्षेत्र	24.3
तृतीयक/सेवा क्षेत्र	26.8

भारत में जी.डी.पी. एवं रोजगार में संबंध– सामन्यतः जी.डी.पी. एवं रोजगार के मध्य धनात्मक संबंध देखने को मिलता है। अर्थात जैसे–जैसे जी.डी.पी. में वृद्धि होती है वैसे–वैसे रोजगार में भी वृद्धि होती जाती है। यदि जी.डी.पी. में वृद्धि रोजगार में बढ़ोत्तरी कर पाती है तो उसे समावेशी विकास की संज्ञा दी जाती है। भारत में भी समावेशी विकास की अवधारणा को साकार करने का प्रयास किया गया है। लेकिन वास्तव में भारत में पिछले दो दशको का अनुभव दर्शाता है, कि तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद जो रोजगार के अवसर बनाये गये वो अपर्याप्त थे। जो कि अग्रसारणी से स्पष्ट है–

भारत में जी.डी.पी वृद्धि एवं रोजगार वृद्धि

अवधि	जी.डी.पी. वृद्धि	रोजगार वृद्धि
1972–73 से 1983	4.66	2.44
1983 से 1993–94	4.98	2.02
1993–94 से 2004–2005	6.27	1.84
2004–05 से 2009–10	9.08	0.22
2010 से 2012	7.08	1.12

स्त्रोत– NSS 68 राउण्ड 2011–12 एवं महेन्द्र देव आलेख रोजगार और आर्थिक 2010 के बीच वृद्धि योजना अक्टूबर 2013

भारतीय अर्थव्यवस्था औसतन 6 से 7 फीसदी की विकास दर से आगे बढ़ी है। और किसी भी लिहाज से यह विकास दर खराब नहीं कहीं जा सकती है। दिक्कत यह रही है, कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने यह विकास दर सेवा क्षेत्र खासकर सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के दम पर हॉसिल किया है। जो कि टिकाऊ विकास का सूचक नहीं है। यही वजह हमारे विकास से समावेशी शब्द को अलग कर देता है। भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊंची विकास दर को जॉबलेश ग्रोथ का दौर कहा जाता है।

भारत और चीन, दो सबसे बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाएँ लगातार वैश्विक आर्थिक चर्चाओं में सबसे आगे रही हैं। हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित वार्षिक भारत नेतृत्व शिखर सम्मेलन में इन आर्थिक दिग्गजों के बीच बदलती गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित किया गया। जहां पिछले दशकों में चीन की तीव्र वृद्धि ने उसे वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बना दिया है, भारत की हालिया वृद्धि ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है, जिससे भारत एक मजबूत दावेदार के रूप में सामने आया है।

विकास के पथ पर लगातार आगे बढ़ते इस घटनाक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, यूएस–इंडिया स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप फोरम के अध्यक्ष जॉन चैंबर्स ने टिप्पणी करते हुए कहा, "इस सदी के अंत तक, भारत न केवल चीन से आगे निकल जाएगा, बल्कि सकल घरेलू उत्पाद के मामले में 100 प्रतिशत बड़ा होगा"। उनका ये आशावादी बयान महज़ मज़बूत भविष्यवाणियों में निहित नहीं था, बल्कि पिछले दशक में भारत द्वारा की गई उस ठोस प्रगति के आधार पर था, जो परिवर्तनकारी नीतियों और सुधारों से प्रेरित थीं और जिन्होंने इसके आर्थिक परिदृश्य को नया आकार दिया। इसने देश के असाधारण उत्थान और वैश्विक मंच पर इसकी भविष्य की

संभावनाओं पर चर्चा का माहौल तैयार किया।

चेम्बर्स सिर्फ दूरगामी भविष्य तक ही नहीं रुके। उन्होंने भारत सरकार को उसके प्रयासों का श्रेय देते हुए, उस नींव का ज़िक्र किया जो पहले ही रखी जा चुकी है। उन्होंने कहा, "पहले पांच वर्षों के लिए, मैं तर्क दूंगा कि इस प्रशासन ने एक दशक के लिए मंच तैयार करने का अद्‌भुत काम किया।" उनकी यह टिप्पणी भारत के असाधारण आर्थिक प्रदर्शन की पृष्ठभूमि में आई है, जिसमें विकास की गति तेजी से बढ़ रही है। विश्व बैंक के भारत विकास अपडेट के अनुसार, देश की जीडीपी वित्त वर्ष 2024–25 में 7% की मजबूत दर से बढ़ने का अनुमान है, जो दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति को दर्शाती है। विकास की यह गति लगातार बनी हुई है, वित्त वर्ष 2022–23 में सकल घरेलू उत्पाद 7.0ः से बढ़कर वित्त वर्ष 2023–24 में 8.2ः हो गया है। ये आंकड़े न केवल भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाते हैं, बल्कि एक सुनियोजित रणनीति के अच्छे नतीजे दिखाते हैं। भारत की तीव्र वृद्धि के विपरीत, चीन की आर्थिक विकास पथ ज्यादा धीमा प्रतीत होता है। विश्व बैंक ने चीन की 2024 में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 4.8% रहने का अनुमान लगाया है, जो 2025 में और धीमी होकर 4.3% हो जाएगी।

भारत के सकारात्मक आर्थिक दृष्टिकोण पर आधारित, सेबी के पूर्णकालिक सदस्य अनंत नारायण जी ने एनएसई में निवेशक जागरूकता सप्ताह के दौरान भारत के प्रभावशाली बाजार प्रदर्शन पर प्रकाश डाला। पिछले पांच वर्षों में भारतीय बाजारों ने लगातार करीब 15 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दी है, चीन के बाजार इसके करीब भी नहीं हैं। यह लगभग शून्य है। वास्तव में, कुछ मामलों में, जैसे कि

हांगकांग में यह वास्तव में नकारात्मक है," उन्होंने कहा। नारायण ने इस बात पर जोर दिया कि वित्त वर्ष 2024 एक असाधारण वर्ष था, जिसमें बेंचमार्क सूचकांकों में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि अस्थिरता कम होकर केवल 10 प्रतिशत रही। उन्होंने इसे "सोने पे सुहागा" के रूप में वर्णित किया और इसे कम जोखिम और उच्च रिटर्न का एक आदर्श संयोजन करार दिया।

बाजार के प्रदर्शन के अलावा, भारत के विकास की जड़ें डिजिटल इंडिया जैसी रणनीतिक पहलों में खोजी जा सकती हैं, जिसे चैंबर्स ने देश की आर्थिक रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बताया। उन्होंने कहा, डिजिटल इंडिया सिर्फ एक सपना नहीं था। यह इस बात की समझ थी कि बाज़ार किस तरफ जाएगा"। साल 2015 में शुरू की गई इस पहल का मकसद भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलना था और उसके परिणाम उल्लेखनीय से कम नहीं हैं। डिजिटल इंडिया के सबसे महत्वपूर्ण नतीजों में से एक यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) द्वारा लाया गया परिवर्तन है, जिसने भारतीयों के लेनदेन करने के तरीके को नया आकार दिया है। वित्त वर्ष 2017–18 में 92 करोड़ लेनदेन से बढ़कर वित्त वर्ष 2023–24 में 13,116 करोड़ लेनदेन तक, यूपीआई की वृद्धि डिजिटल भुगतान को व्यापक रूप से अपनाने पर प्रकाश डालती है। इस सफलता ने सुविधाओं को फिर से परिभाषित किया है और भारत को डिजिटल वित्त में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया है।

यूपी से परे, कोविड–19 महामारी के दौरान सीओडब्ल्यूआईएन प्लेटफ़ॉर्म एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा, जो भारत के टीकाकरण अभियान के लिए डिजिटल रीढ़ के तौर पर काम कर रहा है। इसने सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की देश की क्षमता को प्रदर्शित करते हुए, एक भी दिन की देरी किए बिना 220 करोड़ से अधिक खुराक देने में प्रशासन को सक्षम बनाया। सीओडब्ल्यूआईएन न केवल वैश्विक संकट के प्रति भारत की प्रभावी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि कैसे डिजिटल बुनियादी ढांचा, बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य पहलों का समर्थन कर सकता है।

कुल मिलाकर ये उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि डिजिटल इंडिया ने दीर्घकालिक विकास के लिए तैयार डिजिटल रूप से समावेशी अर्थव्यवस्था के लिए, आधार तैयार कर दिया है। इस डिजिटल क्रांति का प्रभाव भुगतान और पहचान सत्यापन से भी आगे तक फैला हुआ है। आयुष्मान भारत योजना के तहत 35.6 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं, जिससे लाखों लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई है। इसके अलावा, 9 करोड़ से अधिक फास्टैग्स जारी किए गए हैं, जो 2023 में लगभग दुनिया भर में निर्मित वाहनों की संख्या के बराबर है और जिससे देश के राजमार्गों पर सुगम यात्रा की सुविधा मिलती है। इस तरह के मील के पत्थर भारत के डिजिटल परिवर्तन की व्यापक प्रकृति को दिखाते हैं, जो जीवन के हर पहलू को छूते हैं और सतत् आर्थिक उन्नति को बढ़ावा देते हैं।

चैंबर्स ने भारत में स्टार्टअप्स की विस्फोटक वृद्धि को देश की आर्थिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण कारक करार दिया। उन्होंने कहा कि, सिर्फ 10 से 12 साल पहले, भारत में बहुत कम स्टार्टअप थे। वास्तव में, साल 2015 से 2022 तक स्टार्टअप्स में निवेश 15 गुना बढ़ गया"। निवेश में इस उछाल ने एक गतिशील उद्यमशीलता के माहौल को बढ़ावा दिया है। 151,000 से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स के साथ भारत अब दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप्स का घर है। वर्ष 2016 में शुरू की गई स्टार्टअप इंडिया पहल ने 15.5 लाख से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करके इस विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह इस बात का प्रमाण है कि कैसे सही नीतियों की मदद से नवाचार, गंभीर चुनौतियों का समाधान करते हुए आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकता है।

चैंबर्स ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के दायरे पर भी बात की, एक ऐसा क्षेत्र जो भारत में बेहद आकर्षण प्राप्त कर रहा है। सरकार द्वारा 2023 में "भारत के लिए एआई 2.0" जैसी पहल शुरू करने और 2024 में ग्लोबल इंडियाएआई शिखर सम्मेलन की मेजबानी के साथ, यह साफ है कि भारत वैश्विक मंच पर खुद को एआई में अग्रणी के रूप में स्थापित कर रहा है। चैंबर्स ने कहा, "भारत ने एआई के लिए आधार तैयार कर लिया है और यह उसके कार्यबल की अगली पीढ़ी को आकार देगा।" शिखर सम्मेलन दुनिया भर से 12,000 से अधिक विशेषज्ञों को एक साथ एक मंच पर लाया, जो एआई में भारत के बढ़ते प्रभाव और भविष्य की आर्थिक सफलता के लिए इस तकनीक का उपयोग करने की प्रतिबद्धता दर्शाता है। एआई पर यह फोकस महज़ तकनीकी प्रगति के बारे में नहीं है, बल्कि भविष्य की नौकरियों में कुशल कार्यबल तैयार करने के बारे में है, जो निरंतर आर्थिक विकास को सुनिश्चित करता है।

हालाँकि, भारत की आर्थिक कहानी केवल शीर्ष पर विकास के बारे में नहीं है। चैंबर्स की टिप्पणियाँ इन पहलों के व्यापक प्रभाव पर भी प्रकाश डालती हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) जैसी योजनाओं द्वारा संचालित डिजिटल समावेशन ने पहले बैंकिंग सुविधा से वंचित लाखों व्यक्तियों को अब औपचारिक वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बनाया है। एक दशक पहले अपनी स्थापना के बाद से, पीएमजेडीवाई ने 53 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले हैं, जिससे लोगों को वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने और अर्थव्यवस्था में भाग लेने में सक्षम बनाया गया है। इस प्रकार का जमीनी स्तर का विकास यह सुनिश्चित करने के लिए अहम है कि भारत का विकास समावेशी है और समृद्धि का लाभ देश के हर कोने तक पहुंच रहा है।

आवास एक अन्य क्षेत्र है, जहां समावेशी विकास साफ दिखाई देता है, खासकर मध्यम वर्ग के लिए। प्रधानमंत्री आवास योजना–शहरी (पीएमएवाई–यू) के तहत, 1.18 करोड़ से अधिक घर स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 87.25 लाख से अधिक पहले ही निर्मित और वितरित किए जा चुके हैं। यह महत्वाकांक्षी आवास पहल, किफायती घर चाहने वाले मध्यम वर्ग सहित लाखों परिवारों को सुरक्षित और हर मौसम के लिए उपयुक्त घर प्रदान करके उनका जीवन बदल रही है। इस योजना के ठोस परिणाम इस बात का एक और संकेत हैं कि कैसे भारत दीर्घकालिक विकास की नींव रख रहा है और यह सुनिश्चित कर रहा है कि कोई भी पीछे न छूटे, स्थिरता को बढ़ावा मिले और लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो।

भविष्य की बात करते हुए चेम्बर्स का स्वर आशावादी था, लेकिन वास्तविकता पर आधारित था। उन्होंने कहा, "नींव सिर्फ अगले पांच साल के लिए नहीं, बल्कि अगले 25 साल के लिए रखी गई है।" उनका यह विश्वास, कि सदी के अंत तक भारत चीन की आर्थिक ताकत को पार कर जाएगा, कुछ लोगों के लिए महत्वाकांक्षी लग सकता है, लेकिन पिछले दशक में देश की प्रगति उनके शब्दों को बल देती है। डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने, स्टार्टअप्स के उदय, शेयर बाजार का प्रदर्शन, एआई पर मजबूत फोकस और समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता के साथ, भारत एक ऐसे पथ पर है जो आने वाले वर्षों में वैश्विक आर्थिक गतिशीलता को फिर से परिभाषित कर सकता है।

निष्कर्ष— निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है, कि भारत में आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ रोजगार में वृद्धि नहीं हो पाई है। इसके लिए आवश्यक है, कि कृषि क्षेत्र का तीव्रगति से विकास किया जाय। तत्पश्चात् विनिर्माण क्षेत्र का और उसके बाद सेवा क्षेत्र को प्राथमिकता दी जाय। साथ ही जहां श्रम प्रदान तकनीकी से उत्पादन करने की संभावना हो वहां पूंजी प्रदान तकनीकी का प्रयोग न किया जाय। जैसा कि लेविस ने कहा है, कि जब प्रचलित मौद्रिक मजदूरी दर पर श्रम का आधिक्य हो तो उस मजदूरी दर पर पंजी को उत्पादक नहीं माना जा सकता है। यदि वह ठीक वही काम करती है, जिसे श्रम भी उतनी ही अधिक अच्छी तरह से कर सकता है। इस तरह

के निवेश पूंजीपतियों के लिए भले ही लाभप्रद हो लेकिन समाज के दृष्टिकोण से वे अलाभकारी होंगे क्योकि उनसे बेरोजगारी बढ़ेगी न कि उत्पादन।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. महेन्द्र देव, आलेख "रोजगार और आर्थिक वृद्धि" योजना अक्टूबर 2013
2. भारतीय अर्थ व्यवस्था का विकास, एन.सी.ई.आर.टी. 2005
3. टरविंद कुमार सेन जनांकिकीय लाभांश या जनसंख्या अभिशाप योजना अक्टूबर 2013
4. Tarvind Kumar Sen, Demographic Dividend or Population Curse Planning, October 2013
5. W.A. Lawis, "The Theory of Economic Growth" Oxford University Press London 1955
6. C.S.O. 2012
7. भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2007: नीति संक्षिप्त विवरण, 6 जून 2011 कोवेबैक मशीनसंग्रहीत। ओईसीडी।
8. "भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था वैश्विक विकास का नेतृत्व करना जारी रखती है"। आईएमएफ। मूल से 10 जून 2023 को संग्रहीत। 23 मई 2023 को पुनः प्राप्त।
9. "राज्यवार डेटा" (पीडीएफ)। भारत सरकार। 29 फरवरी 2016। मूल (पीडीएफ) से 10 जनवरी 2017 को संग्रहित। 11 दिसंबर 2016 को पुनः प्राप्त
10. नोवोत्नी, जे., रामचंद्रन, एन. (2010): बेरोजगार विकास का विकल्प? अखिल भारतीय संदर्भ और ग्रामीण तमिलनाडु से सहभागी विकास योजना का एक मामला। भूगोल, 115, 3, 330–346 "संग्रहित प्रति" (पीडीएफ)। मूल प्रति से 21 जुलाई 2011 को संग्रहित (पीडीएफ)। 23 अक्टूबर 2010 को पुनः प्राप्त ।
11. "अर्थव्यवस्था और विकास"। मूल रूप से 7 अक्टूबर 2017 को संग्रहित।

Cite this Article

"डॉ0 अरूण प्रसाद अमन", "भारत में आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के अवसरः एक समीक्षात्मक अध्ययन', ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

Journal URL- https://www.researchprojournal.com/

DOI- 10.70650/rpimj.2025v1i2000017